6. घोषन्त विद्या लपटन्त जोर

प्रस्तुत पाठ घोषन्त विद्या लपटन्त जोर एक विचारात्मक निबंध थिक । एकर लेखक विद्वान् प्रोफेसर आ प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रामदेव झा छथि । प्रस्तुत पाठमे लेखक अभ्यासक फल कोना लाभकारी होइत अछि ताहि पर बल देलनि अछि । अभ्याससँ बिगड़लो बात कोना बनि जाइत अछि तकर रोचक उदाहरण दऽ विद्यार्थीकेँ प्रेरित करबाक विचार प्रस्तुत कयलनि अछि ।

एकटा प्रसिद्ध कहबी अछि 'घोषन्त विद्या लपटन्त जोर' नहि किछु तँ थोड़बो थोड़ ।' ई कहबी समाजक चिरकालक सामूहिक अनुभवक सूत्र रूपमे सारभूत निष्कर्ष थिक । यदि कोनो विषयक बेर-बेर आवृत्ति कयल जाय तँ किछु ने किछु विद्या हासिल होयबे करत । तहिना नित्य दिन किछु-किछु व्यायाम कयल जाय तँ ओहिसँ शारीरिक शक्तिमे वृद्धि होयबे करत । ई तँ भेल एहि कहबीक तात्पर्य । परन्तु एहूसँ बेसी गम्भीर वस्तु दिस एकर संकेत अछि, ओ थिक अभ्यास, निरन्तर अभ्यास । कोनो काजकेँ बेर-बेर करैत रहब अभ्यास थिक । मनुष्य जे किछु जनैत अछि, जे किछु सिखैत अछि, जे किछु कऽ सकैत अछि; तकरा मूलमे निहित रहैत छैक निरन्तर अभ्यास । कोनो विद्या, कोनो कला, अथवा आने कोनो विशिष्ट प्रकारक कार्यमे प्रतिभा ओ ज्ञानक स्थान महत्त्वपूर्ण रहैत छैक, परन्तु ओ तावत धरि सार्थक नहि भऽ सकत, फलप्रद नहि भऽ सकत, जीवनोपयोगी नहि भऽ सकत, जावत धरि ओहिमे अभ्यासक संयोग नहि कयल जायत ।

संस्कृत अध्यापनक क्षेत्रमे एकटा उक्ति विशेष रूपसँ प्रचलित अछि जे–'पक्षे वैयाकरणाः' । अर्थात् पन्द्रह दिन धरि वैयाकरण लोकनि पढ़ल पाठक आवृत्ति नहि करथि तँ हुनका व्याकरण शास्त्र बिसरि जयतनि । ई बात आनहु शास्त्र ओ विद्याक सम्बन्धमे चरितार्थ होइत अछि ।

अभ्यास एकटा एहन साधन अछि जाहिसँ जीवनक समस्त गति-विधिकेँ उपयोगी ओ सुन्दर बनाओल जा सकैत अछि । कमार काठ पर रंग-विरंगक खोधामा पाड़ि दैत अछि । एहन कारीगरी ओ कोनो पोथीसँ नहि पढ़ने रहैत अछि; ई ओकर कौलिक ज्ञान रहैत छैक । परन्तु ओकर कौलिक ज्ञान तखने सार्थक होइत छैक जखन ओ ओहि ज्ञानकेँ अभ्यास द्वारा आत्मसात् कऽ लैत अछि । मालि सब कतरनीसँ कोढ़िलाकेँ कतरि-कतरि कऽ कागत सन पातर पत्र तैयार कऽ लैत

अछि । फूलक केसर सन मेही-मेही टुकड़ी बना कऽ ओहिसँ रंग-विरंगी आकारक फूल, फूदना, मोर तैयार कऽ लैत अछि । हाथक एहन कारीगरी आ सफाइ ओकरा अभ्यासेसँ प्राप्त होइत छैक । अभ्यासक एहन-एहन कतोक उदाहरण देल जा सकैत अछि ।

ई तँ भेल परम्परासँ प्राप्त ज्ञानक सम्बन्धमे । मुदा सामान्यो व्यावहारिक जीवनमे अभ्यासक महत्त्व देखल जा सकैत अछि । साइकिल तँ लोक खूब चढ़ैत अछि । दू पहियाक साइकिल ओना ठाढ़ नहि रहि सकैत अछि । परन्तु वैह साइकिल नीक जकाँ चलैत अछि सवारक नियंत्रण पर । मुदा साइकिल पर चढ़बाक लेल लोककेँ पहिने अभ्यास करऽ पड़ैत छैक । जकरा बुतेँ अभ्यास नहि कयल होइत छैक, से साइकिलपर कहियो ने चढ़ि पबैत अछि ।

अनेक व्यक्तिक अक्षर ततेक सुन्दर, सोझ, सुडौल होइत छनि जे लगैत छैक जेना छापाक अक्षर हो । अक्षर देखि पढ़नाहरक मोन प्रसन्न भऽ जाइत छनि । परीक्षामे बहुतो परीक्षार्थी उत्तर अल्पो लीखि अपन नीक हस्तलेखक बलपर परीक्षकसँ नीक अंक पाबि लैत अछि। दोसर दिस बहुतो व्यक्तिक हस्तलेख कौआक टाङ सन टेढ़-मेढ़ होइत छनि । कतोक व्यक्तिक अक्षर तँ तेहन होइत छनि जे अनका सोझाँ लिखैत लाज होबऽ लगैत छनि । हम एकटा एहन नीक लोककेँ जनैत छियनि जे भेंट भेला पर बड़ सौजन्य देखबैत छथि शिष्ट व्यवहार, आत्मीयता ओ शालीनतासँ मन मोहि लैत छथि परन्तु दूर भेला पर ने अपना दिससँ पत्र लिखैत छथि, ने पत्रक उत्तर दैत छथि । एकर कारण की, से बहुत दिन धरि रहस्य बनल रहल । बहुत बादमे ई भेद फूजल जे हुनक अक्षर बड़ अधलाह होइत छनि, जाहि संकोचेँ ओ ककरो पत्र नहि लिखैत छथिन । अनेक व्यक्तिक लेख तँ एहन भूताक्षर भेटत जे लेखक स्वयं अपन लिखल अपने पढ़ि सकताह ताहिमे सन्देह । महात्मा गान्धीक सेहो अक्षर नीक नहि होइत छलनि जाहि लय हुनका आजीवन कचोट होइत रहलनि । तेँ बच्चा सबकेँ आरम्भेसँ लिखना लिखाओल जाइत छैक । लिखना थिक सुलेख बनयबाक निरन्तर अभ्यास ।

अभ्यासमे जे चूकि जाइत छथि, तनिका जीवनमे हीनता बोधक पीड़ा सहऽ पड़ैत छनि । सहै पड़तनि ! परन्तु एहि पीड़ासँ उबरि सकैत छथि यदि ओ अविलम्ब इच्छित दिशामे अभ्यास आरम्भ कऽ देथि । अभ्यास आरम्भ करबामे अबेर जे होउक मुदा बेर नहि बीतल रहैत छैक । अभ्यास

द्वारा बिगड़लो बातकेँ बनाओल जा सकैछ । जीवनक दिशा बदलल जा सकैत अछि ।

ऊपर नीक आ अधलाह अक्षरक चर्चा भेल अछि । एही प्रसंगक एकटा और घटना हमरा देखल अछि । से देखि कऽ विश्वास करऽ पड़त जे प्रौढ़ो वयसमे यदि निरन्तर अभ्यास कयल जाय तँ अधलाहसँ अधलाह अक्षरकेँ सुधारल जा सकैत अछि । एकटा परिचित प्राध्यापक छथि; नीक, प्रतिष्ठित । अपना विषयक विद्वत्तामे प्रसिद्धि छनि । परन्तु छात्रावस्थामे वर्गमे हुनक बड़ दयनीय स्थिति रहैत छलनि । प्रतिभाशाली होइतो परीक्षामे जे किछु लिखैत छलाह, से परीक्षक पढ़ि नहि पबैत छलथिन । परिणाम स्वरूप बड़ सामान्य अंक भेटैत छलनि । साल भरि जे छात्र वर्गमे सर्वोत्तम प्रतिभाक प्रदर्शन करैत छल, सैह परीक्षा-फलक दृष्टिएँ अति सामान्य छात्र सिद्ध होइत छल । प्रवेशिका परीक्षाक छओ मास पूर्व एकटा शिक्षक एक दिन हुनक कापीकेँ तमसा कऽ चिर्री-चोथ कऽ फाड़ि कऽ फेकि देलथिन आ कहलथिन– 'हओ बाउ ! तोँ नीक प्रथम श्रेणीक विद्यार्थी छह अवश्य मुदा अपन भूताक्षरक कारण अगिला परीक्षामे अवश्य फेल करबह । ई हमर ब्रह्मवाक्य छह ।' ई बात हुनका लागि गेलनि । ओही दिनसँ ओ अपन हस्तलेखकेँ सुलेख बनयबा केर नियमित अभ्यास करऽ लागि गेलाह । परीक्षाक समय अबैत-अबैत ततबा सुधार भऽ गेलनि जे प्रवेशिका परीक्षामे सत्तरि प्रतिशत अंक प्राप्त कयलनि । प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह। आ आब तँ हुनक पाण्डुलिपि प्रेसो इत्यादिमे आदर्श मानल जाइत छनि । छात्र लोकनि हुनक अक्षरक अनुकरण करबाक चेष्टा करैत छथिन । वस्तुतः अपन अभ्यासक बलपर गुरुजीक ब्रह्मवाक्यकेँ अन्यथा सिद्ध कऽ देलनि । जँ विलम्बोसँ अभ्यास आरम्भ नहि कयने रहितथि तँ संभव छल जे हुनक परीक्षाफल निम्नकोटिक होइतनि आ तखन हुनक भावी जीवन, जेहन एखन छनि, से नहि भऽ पबितनि । तेँ कहल जे अभ्यासक बेर बीतल नहि रहैत छैक ।

अभ्यासक सुपरिणामक एहन-एहन हजारो उदाहरण समाजमे देखल जा सकैत अछि । वास्तवमे, प्रत्येक व्यक्तिमे कोनो ने कोनो प्रकारक विशिष्ट क्षमता होइत छैक । परन्तु ओ क्षमता निष्क्रिय भऽ कऽ समाप्त भऽ जाइत छैक। एकर कारण थिक अभ्यासक अभाव । यदि ओहि क्षमताकेँ नियमित रूपसँ अभ्यासक संयोग भेटौक तँ ओ क्षमता चमकि उठैत छैक, अन्यथा क्रमशः क्षीण होइत-होइत नष्ट भऽ जाइत छैक । विशिष्ट काज करबाक वैयक्तिक विशेषताकेँ

प्रतिभा कहल जाइत छैक । प्रतिभाकेँ निश्चिते रूपसँ अभ्यास चाही । हीराक सौन्दर्य तखने झलकैत छैक जखन ओकरा खराजल जाइत छैक । हीरा कतबो मूल्यवान् होअओ मुदा अनगढ़ हीराकेँ के गरदनिमे लटकाबऽ चाहत ? किएक ? किएक तँ ओ अनगढ़ हीरा आभूषण रूपमे शोभा नहि बढ़ौतैक । सोनक ढेपकेँ डोरामे बान्हि कऽ गरदनिमे लटका लिअय तँ केहन लगतैक ? मुदा वैह सोनक ढेपकेँ गढ़नि दऽ कऽ सुन्दर आभूषण बना देल जाइत छैक, तँ ओ आभूषण जैह पहिरैत अछि से सुन्दर लगैत अछि तेँ जँ प्रतिभाकेँ हीरा कहल जाय तँ अभ्यास थिक ओकरा खराजब क्रिया । प्रतिभा जँ सोन थिक, तँ अभ्यास थिक ओकर गढ़नि ।

तेँ कहऽ पड़ैछ जे अभ्यास आवश्यक अछि । निरन्तर अभ्यास किछु ने किछु लाभ दैते छैक । जीवनक लेल उपकारक होइते छैक । अत: मैथिलीक ई कहबी पूर्ण रूपेँ स्मरणीय ओ अनुकरणीय अछि जे–

घोषन्त विद्या लपटन्त जोर,
नहि किछु तँ थोड़बो थोड़ ।

–रामदेव झा

शब्दार्थ:

चिरकाल	–	बहुत काल
आवृत्ति	–	दोहरायब
निरन्तर	–	लगातार
फलप्रद	–	फल देबऽवला
कौलिक	–	कुलसँ सम्बन्धित
आत्मसात	–	हृदयमे बसा लेब
हस्तलेख	–	हाथसँ लिखल
संकोच	–	लाज
भूताक्षर	–	खराब अक्षर
कचोट	–	दुख ।

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) गाँधीजीकेँ कथीक कचोट रहलनि ।

(2) भूताक्षरक संबंधमे लेखक कोन उदाहरण प्रस्तुत कयलनि अछि ?

(3) नीक अक्षर आ खराब अक्षरसँ की लाभ आ हानि होइत अछि ?

(4) व्यक्तिक विशिष्ट क्षमता कोन कारणसँ निष्क्रिय भऽ समाप्त भऽ जाइत अछि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) निरन्तर अभ्याससँ की लाभ होइत अछि ?

(2) निरन्तर अभ्यास नहि कयलासँ की भऽ सकैत अछि ?

(3) जीवनकेँ उपयोगी आ सुन्दर बनयबाक लेल कोन साधन उत्तम होइछ ?

(4) कौलिक वा कोनो ज्ञान कखन सार्थक होइछ ?

(5) 'पक्षे वैयाकरणाः' उक्तिक आशय लिखू ।

(6) लिखना लिखबाक की उद्देश्य अछि ?

(ग) **निम्नलिखित उक्तिक अर्थकेँ स्पष्ट करूः**

(1) हीराक सौन्दर्य तखने झलकैत छैक जखन ओकरा खराजल जाइत छैक ।

(2) कौलिक ज्ञान तखने सार्थक होइत छैक जखन ओ ओहि ज्ञानकेँ अभ्यास द्वारा आत्मसात् कऽ लैत अछि ।

(3) अभ्यास द्वारा बिगड़लो बातकेँ बनाओल जा सकैत अछि । जीवनक दिशा बदलल जा सकैत अछि ।

(4) प्रतिभा जँ सोन थिक, तँ अभ्यास थिक ओकर गढ़नि ।

(घ) **सही-गलती:**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) अभ्यास एकटा एहन साधन अछि जाहिसँ जीवनक समस्त गतिविधिकेँ उपयोगी ओ सुन्दर बनाओल जा सकैत अछि । ☐

(2) दू पहियाक साइकिल ओना ठाढ़ रहि सकैत अछि । ☐

(3) अक्षर देखि पढ़नाहरक मोन प्रसन्न भऽ जाइत छनि । ☐

(4) महात्मा गाँधीकेँ अपन अक्षरक प्रति कोनो कचोट नहि छलनि । ☐

(5) अभ्यास द्वारा बिगड़ल बातकेँ बनाओल नहि जा सकैछ । ☐

(ङ.) **रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू:**

(1) अभ्यास एकटा एहन साधन अछि जाहिसँ ..... उपयोगी ओ सुन्दर बनाओल जा सकैत अछि ।

(2) कौलिक ज्ञान तखने सार्थक होइत छैक जखन ओ ओहि ज्ञानकेँ अभ्यास द्वारा ..... कऽ लैत अछि ।

(3) हाथक एहन कारीगरी आ ..... ओकरा ..... प्राप्त होइत छैक ।

(4) साइकिल पर चढ़बाक लेल लोककेँ पहिने ..... करऽ पड़ैत ..... ।

(5) अक्षर देखि पढ़नाहरक मोन ..... भऽ जाइत छनि ।

(च) **निम्नलिखित शब्दकेँ शुद्ध करू:**

(1) अवस्य (2) वियाकरण (3) आवीरती (4) आतमसात

(5) आतमीयता (6) परिक्षक (7) परिश्रमिक ।

भाषा अध्ययन:

(1) सहचर शब्द सर्वदा संग-संग युग्म रूप मे प्रयुक्त होइत अछि

जेना- चिर्री-चोथ, रंग-बिरंग ।

अही आधार पर कोनो दस गोट सहचर शब्द लिखि कऽ ओकरा वाक्यमे प्रयोग करू ।

(2) शारीरिक वा मानसिक व्यापार क्रिया कहबैत अछि ।

जेना- खोधब, गढ़ब, कतरब आदि ।

एहि आधार पर प्रस्तुत पाठसँ क्रिया शब्द चुनि कऽ लिखू ।

योग्यता विस्तार:

(1) अभ्यासक बल पर सफलता प्राप्त कयनिहार कोनो दू गोट घटनाक संग्रह कऽ ओकरा रोचक भाषामे लिखि कक्षामे सुनाउ ।

(2) 'अपन हस्तलेख' एहि विषय पर निबंध लिखू ।

(3) घोषन्त विद्या लपटन्त जोर, नहि किछु तँ थोड़बो थोड़- ई एकटा प्रसिद्ध कहबी अछि, अहि तरहक किछु कहबीक संग्रह करू ।

(4) अपन शिक्षकसँ मार्ग दर्शन लऽ अपन अक्षरकेँ सुधारबाक अभ्यास करू ।

अध्यापन संकेत:

(1) शिक्षकसँ अपेक्षा जे वर्गमे विद्यार्थीकेँ अक्षर सुधारबाक हेतु उचित मार्गदर्शन करथि ।

(2) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ विद्यार्थीकेँ मोहावरा और लोकोक्तिसँ परिचय कराबथि आ एकर संग्रह करबामे ओकरा सहयोग करथि ।

✦✦✦